(1)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5074 **K**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Hindi Kavita : Aadikal Evam Nirgunbhakti Kavya

हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi: DSC-1**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (9×3=27)

(क) देषि चंद मन मंद । साहि आनंद उपन्नौ ।।
निजरि अप्प सुविहान । वोलि आलम अप लिन्नो ।।
हव्य अप्पि दसतक्क । वत्त पुच्छी दुष सुष वर ।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

विधि विधान निम्मयौ। करन उद्देस कविय वर ।।
संग्राम स्वाम मयौं मुक्कयो। क्यों कविंद्र भारष्य तजि ।।
किहि घांन लोइ संभरि धनी। कहौ सुवत्त लज्जो न लजि ।।

अथवा

जमभुनाक तिर उपवन उदवेगल
फिर फिर ततहि निहारी।
गौरस बिके निके अबइते जाइते
जनि जनि पुंछ वनवारि ।।
तोहे मतिमान सुमति मधसूदन
वचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति
वन्दह नन्दकिसोरा ।।

(ख) राम नाम के पटतरे, देबे कौ कछ नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन मांहि ।।
सतगुर मार्‌या बाण भरिं, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़े लागिया, गई दवा सूँ फूटि ।।

अथवा

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका दस गठिया, टेढ़ों टेढ़ो जात ।। टेक ।।
कहा ले आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात ।।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूं बनि हरियल पात ।।
राजा भयौ गांव सौ पाये, टका लाख दस बात ।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात ।।
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात ।।
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात ।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई । जाई पाल पर ठाढ़ी भई ।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली । पद्मावति सौं कहहिं सहेली ।।
ए रानी! मन देखु बिचारी । एहि नैहर रहना दिन चारी ।।
लो लगि अहै पिता कर राजू । खेलि लेहु जौ खेलहु आजू ।।
पुनि सासुर हम गवनब काली । कित हम, कित यह सरवर पाली ।।
कित आवन पुनि अपने हाथा । कित मिलि कै खेलब एक साथा ।।
सासु ननद बोलिन्ह जिठ लेही । दारून ससुर न निसरे देहीं ।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह ।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह ।।

अथवा

सखी एक तेइ खेल न जाना । भै अचेत मनिहार गवाँना ।।
कवँल डार गहि भै बेकरारा । कासों पुकारीं आपन हारा ।
कित खेलै आइउँ एहि साथा । हार गँवाइ चलिऊँ लेइ हाथा ।।
घर पैठत पूँछब यह हारू । कौन उतर पाउब पैसारू ।।
नैन सीप आँसू तस भरे । जानौ मोति गिरहिं सब ढरे ।।
सखिन कहा बौरी कोकिला । कौन मानि जेहि पौन न मिला?
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा । हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा ।।
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ ।
कोई उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ ।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. पृथ्वीराज चौहान के 'बानबेध समय' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (14)

अथवा

'बानबेध समय' का ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व बताइए।

3. विद्यापित के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को लिखिए। (14)

अथवा

विद्यापति के काव्य में लोकजीवन से जुड़ाव का विस्तृत मूल्यांकन हुआ है, सिद्ध कीजिए।

4. कबीरदास के समाज-सुधारक रूप पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

कबीरदास के काव्य के भावपक्ष और कलापक्ष का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

5. मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में व्यक्त रहस्यवाद को समझाइए। (14)

अथवा

'मानसरोदक खण्ड' के आधार पर पद्मावती का सौंदर्य चित्रण कीजिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) मानसरोदक खण्ड की कथावस्तु

(ख) जायसी की प्रतींकात्मकता

(ग) कबीर का रहस्यवाद

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(2)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5392 **K**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ? याद है, पारसाल नकली लड़ाई के पीछे हम आप जगाधरी के जिले में शिकार करने गए थे। हाँ, हाँ, वही जब आप खोते पर सवार थे और आपका खानसामा अब्दुला रास्ते के एक मंदिर में जल चढ़ाने को रह गया था। श्बेशक, पाजी कहीं का!' सामने से वह नीलगाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थी। और आपकी एक

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

गोली कंधे में लगी और पुठे में निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार देखने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नीलगाय का सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजिमेंट की मेस में लगाएँगे।"

(ख) जो अपना मित्र हो, वह शत्रु का व्यवहार करे और गले पर छुरी फेरे, इसे समय के हेर-फेर के सिवा और क्या कहें? जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पड़ने पर धोखा दिया। ऐसे ही अवसरों पर झूठे-सच्चे मित्रों की परीक्षा की जाती है। यही कलियुग की दोस्ती है। अगर लोग ऐसे कपटी-धोखेबाज न होते, तो देश में आपत्तियों को प्रकोप क्यों होता? यह हैजा-प्लेग आदि व्याधियाँ दुष्कर्मों के ही दंड है।

(ग) गजाधर बाबू चलने को तैयार बैठे थे। रेलवे क्वार्टर का वह कमरा जिसमें उन्होंने कितने वर्ष बिता दिए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न लग रहा था। आँगन में रोपे पौधे भी जान-पहचान के लोग थे और जगह-जगह मिट्टी बिखरी हुई थी। पर पत्नी, बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठ कर विलीन हो गया।

(घ) आधे घंटे तक वहीं उसी तरह पड़ी रहने के बाद उसके जी में जी आया वह बैठ गई, आँखों को मल-मलकर इधर-उधर देखा और फिर उसकी इष्टि ओसारे में अध-टूटे खटोले पर सोए अपने छह वर्षीय लड़के प्रमोद पर जम गई। लड़का नंग-धड़ग पड़ा था।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

उसके गले तथा छाती की हड्डियां साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हँड़िया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियाँ उड़ रही थीं।

2. "'उसने कहा था' राष्ट्रीय चेतना की कहानी है।" आप इस कथन से कहां तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'तीसरी कसम' कहानी का प्रतिपादय लिखिए। (17)

3. कहानी के तत्वों के आधार पर 'चीफ की दावत कहानी' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'वारिस' कहानी की समीक्षा कीजिए। (17)

4. 'वापसी' कहानी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'घुसपैठिए' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (16)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10+10=20)

(क) 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक की सार्थकता।

(ख) 'जुम्मन शेख' का चरित्र चित्रण।

(ग) 'तीसरी कसम' कहानी की शिल्पगत विशेषताएं।

(घ) 'सिद्धैश्वरी' की चारित्रिक विशेषताएं।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(3)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

K

Sr. No. of Question Paper : 5042

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10+10)

(क) "वे सुधी मतिमान फिर
करके विचार, विकल्प
शिष्य अपने से लगे
कहने स्वयं संकल्प!"

अथवा

"टहरी पर बैठी होगी, पड़े होंगे सामने फूलों के
सहारे गिन रही होगी
अवधि के बाकी महीने
बिताए दिनों के संपर्क-सुख की
यादों का ले रही होगी मन-ही-मन स्वाद
बिछुड़ी प्यारी के यही तो होते हैं।
साधन।"

(ख) "गुरु ने मुझसे कह दिया यही तो एक वचन
तू बाहर से आकर प्रवेश करले भीतर
मेरी निष्ठा, मेरा आदेश गया यह बन
बस तब से ही तो मैं नाची निर्वसन-नगन"

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

"लोभ लहरि अति नीझर बाजे, काइआ डूबे केसवा।।1।।
संसारु समुन्दे तारि गोविन्दे। तारिले बाप बीठला।।
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ। तेरा पारु न पाइआ बीठुला।।2।।
होहु दइआलु सति गुरु मेलि तू। मोकउ पारि उतारे केसवा।।3।।
नामा कहे हउ तरिभी न जानउ। मोकउ बाह देहि बाह देहि बीठुला।।4।।"

(ग) "मैले-से-ढीले-ढाले कपड़े पहने, सिर पर पगड़ी बाँधे, पीठ पर झोली लिए, हाथों में अंगूरों के दो-चार बक्स लिए एक लम्बा काबुलीवाला सड़क पर धीरे-धीरे जा रहा था - उसे देखकर मेरी कन्या रतन के मन में कैसे भाव उठे, कहना कठिन है।"

अथवा

"चलल कौशिक साधिये काम। पाचु पाचु चलल लक्ष्मण राम।।
देलहु धनुक दिव्य बाणा। लक्ष्मण राम पेखहि सब जाना।।
आश्रम याइते ऋषिक उचाट। पेखिये ताड़का बेढ़ल बाट।।"

2. वैदिक एवं लौकिक भारतीय साहित्य के स्वरुप पर प्रकाश डालते हुए इनकी विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

तमिल साहित्य के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

3. कालिदास रचित 'उत्तरमेघ' के भाव-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'सप्तपर्ण: रामकाव्य का जन्म" के अभिव्यंजना शिल्प की विशेषताएँ बताइए।

4. ललद्यद की कविताओं की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

सुब्रह्मण्यम भारती की कविता 'स्वतंत्रता का गान' राष्ट्रवादी आंदोलन का साक्ष्य है, सिद्ध कीजिए।

5. 'काबुलीवाल' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(५)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5157 **K**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki

Name of the Course : **B.A. Hons. Hindi – DSE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित नाट्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कोऊ नहिं पकरत मेरो हाथ।

बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होड़ अनाथ।।

जाकी सरन गहत सोड़ मारत सुनत न कोउ दुख गाथ।

दीन बन्यौ इत सौं उत डोलत टकरावत निज माथ।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

दिन दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर मैं डूबत धाइ उबारौ नाथ।।

अथवा

जागो जागो रे भाई!
सोवत निसि धौस गंवाई जागो जागो रे भाई।।
निसि की कौन कहै दिन बीत्यौं काल राति चलि आई।
देखि परत नहिं हित अनहित कछु परे बैरि बस जाई।।
निज उद्धार पंथ नहिं सूझत सीस धुनत पछिताई।
अबहूं चेति, पकरि राखो किन जो कछु बची बड़ाई।।
फिर पछिताए कछु नहिं स्वै है रहि जैही मुंह बाई।।
जागो जागो रे भाई।।

(ख) रोष है, हाँ मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास – धर्म के नाम पर स्त्री की आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा, मुझसे बलपूर्वक ली गई है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया है, उसका उत्सव भी कितना सुन्दर है। यह जन संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त से सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे, और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी साँस ले रही हूँ। तुम्हारा स्वस्त्ययन मुझे शान्ति देगा?

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव, नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा वंशीरव। यह कैसी यातना है न सोते चैन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तर्रेखा धुँधली पड़ती जा रहीं है। और धुँधलके में रूप ले रहे हैं-कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

आप नाहक हर बात को अपनी ओर ले जाते हैं। अपनी कल्पना से मेरे दिल में वे बातें देखते हैं, जो मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती। मुझे आपसे घृणा है या नहीं, इसे मैं ही जानती हूँयपर आपको मुझसे जरूर घृणा है। आपने मुझसे शादी कर ली, मैं जानती हूँ। क्यों कर ली, यह भी जानती हूँ। लेकिन विवाह के लिए आपका तैयार हो जाना, यह नहीं बताता कि आपको मुझसे नफरत नहीं। इसका क्रोध चाहे अब आप मेरी सफाई पर निकालें, चाहे मेरी पोशाक या मेरे स्वभाव पर।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

नाटकीय तत्वों के आधार पर 'भारत दुर्दशा' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

3 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए इसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

4. 'कथा एक कंस की' नाटक का केंद्रीय विचार लिखिए। (15)

अथवा

'कथा एक कंस की' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'तौलिये' एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'उत्सर्ग' एकांकी का मूल भाव उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

77RF-04-07 10 Copy.

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5365**

Unique Paper Code : **2052102303**

Name of the Paper : **Samanya Bhasha Vigyan (DSC)**

Name of the Course : **B.A. Hons. Hindi**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भाषा की संरचना स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषता बताइए। 15

अथवा

भाषाविज्ञान की परिभाषा देते हुए उसके अध्ययन की उपयोगिता पर विचार कीजिए।

2. स्वन और स्वनिम का स्वरूप उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए दोनों में अंतर बताइए। 15

अथवा

ध्वनि-परिवर्तन की दिशाओं पर विचार कीजिए।

3. वाक्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार बताइए। 15

अथवा

वाक्य की परिभाषा देते हुए उसकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. अर्थ के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अर्थ एवं शब्द के संबंध पर विचार कीजिए। 15

अथवा

अर्थ की परिभाषा देते हुए अर्थ प्रतीति के साधनों पर विचार कीजिए।

5. निम्न में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 3×10=30

(1) भाषा की विशेषताएँ

(2) वाक्य के निकटस्थ अवयव

(3) शब्द और रूप

(4) हिन्दी संस्वन

(5) रूप परिवर्तन की दिशाएँ

(6) अर्थ परिवर्तन के कारण।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(6)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 12778 **K**

Unique Paper Code : 2054001003

Name of the Paper : HINDI CINEMA AUR USKA ADHYYAN
हिंदी सिनेमा और उसका अध्ययन

Name of the Course : **B.A. (HONS) HINDI**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. हिंदी सिनेमा की विकास-यात्रा को विस्तार से लिखिए। (18)

अथवा

एक जनमाध्यम के रुप में सिनेमा का क्या महत्त्व है? इसे कला और तकनीक का संगम क्यों कहा जाता है?

2. सिनेमा अध्ययन की विभिन्न दृष्टियों पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

व्यावसायिक सिनेमा की विशेषताएं बताते हुए, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रभाव को रेखांकित कीजिये।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. सिनेमा में कैमरे की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

पटकथा से क्या आशय है, फिल्म निर्माण में पटकथा का क्या महत्व है?

4. किसी फिल्म की समीक्षा करते समय इसके किन पहलुओं पर ध्यान रखना आवश्यक है? आपकी निगाह में फिल्म की विषय वस्तु अधिक महत्त्वपूर्ण है या तकनीकी पक्ष? (18)

अथवा

'नायक-प्रधान हिंदी सिनेमा के दौर में मदर इंडिया ने एक सशक्त भारतीय स्त्री की छवि को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।' उपर्युक्त कथन के आलोक में मदर इंडिया की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (6+6+6=18)

(क) हिंदी सिनेमा में गीत-संगीत का महत्व

(ख) सिनेमा में लाइट और साउंड का महत्व

(ग) शोले फिल्म की सफलता में संवादों का महत्व

(घ) समानान्तर सिनेमा का सामान्य परिचय

(ङ) हिंदी सिनेमा में सेंसर बोर्ड की भूमिका

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5012 **K**

Unique Paper Code : 2052103501

Name of the Paper : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुसार त्रासदी को विश्लेषित करते हुए उसके तत्वों को निरूपित कीजिए। (18)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धांत का विस्तृत विवेचन कीजिए।

2. वर्ड्सवर्थ के काव्य और काव्यभाषा संबंधी मान्यताओं को विश्लेषित कीजिए। (18)

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

टी. एस. इलियट के निर्वेयक्तिकता के सिद्धांत की समीक्षा कीजिए। (15)

3. यथार्थवाद को परिभाषित करते हुए उसके उद्‌भव और विकास को रेखंकित कीजिए। (18)

अथवा

संरचनावद की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

4. प्रतीक की परिभाषा देते हुए काव्य में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

मिथक की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (9+9=18)

(क) अरस्तू के विरेचन सिद्धांत का महत्व

(ख) मुख्य कल्पना और गौण कल्पना

(ग) स्वच्छंदतावाद

(घ) विसंगति

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(8)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5130 **K**

Unique Paper Code : 2052103502

Name of the Paper : आधुनिक हिंदी कविता (छायावादोत्तर)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V - DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×2=16)

(क) आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से
सृष्टि, के विस्तार का - ऐश्वर्य का -
औदार्य का -

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

कहीं सच्चा, कहीं प्यारा

एक प्रतीक

बिछली घास है

या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर

दोलती कलगी अकेली

बाजरे की।

अथवा

याद आते स्वजन

जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आँख

स्मृति विहंगम की कभी न थकने देगी पांख

याद आता मुझे अपना वह 'श्तरउनी' ग्राम

याद आती लीचियाँ, वे आम

याद आते मुझे मिथित्रा के रुचिर भू-भाग

याद आते धान

याद आते कमल, कुमुदिनी और तालमखान-

(ख) पिछले साठ बरसों से

एक सुई, और तागे के बीच

दबी हुई है माँ

हालांकि वह खुद एक करघा है

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

जिस पर साठ बरस बुने गये हैं।
धीरे-धीरे तह पर तह
खूब मोटे और गझिन और खुरदुरे
साठ बरस।

अथवा

जी, पहले कुछ दिन शर्म जगी मुझको,
पर बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी, लोगो ने तो बेच दिए ईमान,
जी, आप न हो सुनकर ज़्यादा हैरान -
मैं सोच समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ।

2. नागार्जुन प्रगतिशील चेतना के वाहक कवि हैं- स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'पंद्रह अगस्त' कविता राष्ट्रीय सरोकारों की कविता है- विचार कीजिए।

3. अज्ञेय वैयक्तिकता व सामाजिकता का एक साथ निर्वाह करते है- स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

'दयावती का कुनबा' कविता की मूल-संवेदना पर विचार कीजिए।

4. कवि केदारनाथ सिंह मानवीय जिजीविषा व उम्मीद के कवि है- विचार कीजिए। (15)

अथवा

'एक वृक्ष की हत्या' कविता की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

5. 'बुनी हुई रस्सी' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

कवि जगदीश गुप्त के काव्य में आधुनिक भावबोध की गहन अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है - स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए - (7+7=14)

(क) प्रयोगवादी कविता की प्रमुख विशेषताएं

(ख) 'कलगी बाजरे की' कविता का शिल्प-सौंदर्य

(ग) कवि केदारनाथ सिंह के काव्य में बिंब - विधान

(घ) भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य भाषा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(9)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5212 **K**

Unique Paper Code : 2052103503

Name of the Paper : Hindi Aalochna

Name of the Course : **B.A. (Hons.) – DSC**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए।

(10 + 10 + 10 = 30)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(क) जो भाव और विचार लोगों के हृदय को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं। ऐसे पतन के काल में लोग या तो आशिकी करते हैं या अध्यात्म और वैराग्य में मन रमाते हैं। जब साहित्य पर संसार की नश्वरता का रंग चढ़ा हो, और उसका एक-एक शब्द नैराश्य में डूबा हो, समय की प्रतिकूलता के रोने से भरा और श्रृंगारिक भावों का प्रतिबिंब बन गया हो, तो समझ लीजिये कि जाति, जड़ता और हास के पंजे में फँस चुकी है और उसमें उद्योग तथा संघर्ष का बल बाकी नहीं रहा, उसने ऊँचे लक्ष्यों की ओर से आंखें बंद कर ली हैं और उसमें से दुनिया को देखने-समझने की शक्ति लुप्त हो गई है।

अथवा

मुक्त छंद को यहाँ उन्होंने जातीय मुक्ति के व्यापक संदर्भ से जोड़ा। तीसरी ओर छंद-विधान के आंतरिक स्वरूप को नये-नये

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

ढंग से व्यवस्थित करने की उनके मन में तीव्र उत्सुकता थी। आधुनिक काल के आरंभ में कवियों ने वाक्य-भंग के जरिये छंद को गति देने की महत्त्वपूर्ण कोशिश की, अर्थात् क्य को तोड़कर उसके अलग-अलग टुकड़ों को छंद की अलग-अलग पंक्तियों में बैठाया, और संप्रेषण के हित में यों एक तरह की नयी यति-व्यवस्था तैयार की। अँग्रेजी में इस शैली को Enjambment कहा गया है।

(ख) शास्त्र और काव्य, दोनों में ही देवता का नाम लिया जाता रहा, पर मनुष्य की बुद्धि ही अधिक प्रामाण्य समझी गयी, क्योंकि श्रुति वाक्यों में कौन-सा विधि-परक है और कौन-सा अर्थवाद, इन बातों के निर्णय की कसौटी मनुष्य बुद्धि को ही समझा जाता था। मनुष्य रूपी देवता का और भी व्यापक रूप मध्य काल के अन्त में आया, जब भगवान् के नर रूप की लीला ही सब प्रकार के साहित्य, शिल्प और नृत्य गीत का आश्रय बनी। भक्ति का पूरा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

साहित्य भगवान् के नर रूप की लीला को आश्रय करके बना है, वहीं से वह प्रेरणा पाता है।

अथवा

कर्म-सौंदर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है और जिसका विधान कवि-परंपरा बराबर करती चली आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म-सौंदर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृ भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन, टॉल्स्टॉय के समय से चला है वह एक देशीय है। दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुँचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भिक्षा माँगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में कही कर्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्म क्षेत्र का एक मात्र सौंदर्य नहीं कहा जा सकता।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) इतिहास अपने चरित्रों या कठपुतलों को इसकी स्वतन्त्रता नहीं देता कि वे स्वयं अपने को 'न हुआ' मान लें। फिर भी मन का ऐसा भाव लक्ष्य करने लायक और नहीं तो इसलिए भी है कि बह परवर्ती साहित्य पर एक मन्तव्य भी तो है ही-समूचे साहित्य पर नहीं कम-से-कम 'सप्तक' के अन्य कवियों की कृतियों पर (और उससे प्रभावित दूसरे लेखन पर) तो अवश्य ही। असम्भव नहीं कि संकलित कवियों को अब इस प्रकार एक-दूसरे से सम्पृक्त होकर लोगों के सामने उपस्थित होना कुछ अजब या असमंजस - कारी लगता हो। लेकिन ऐसा है भी, तो उस असमंजस के बावजूद वे इस सम्पर्क को सह लेने को तैयार हो गये हैं इसे सम्पादक अपना सौभाग्य मानता है।

अथवा

साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गम्भीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पात्रों की आकांक्षाओं

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

और असंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एक कठिन समस्या है। हमेशा यह खतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एक स्थूल, इतिवृत्तात्मक दृष्टिकोण न अपना ले। यह केवल हवाई खतरा नहीं है। पिछले वर्षों में हिन्दी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को 'सोशलॉजिस्ट' पहले समझता है–कलाकार बाद में। फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रच्छन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अन्तद्वन्द्वों द्वारा प्रदर्शित हो (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लम्बी सैद्धान्तिक बहसों के रूप में (बूंद और समुद्र, जयवर्धन)।

2. द्विवेदी युगीन हिंदी आलोचना के विकास पर विचार कीजिए।

(15)

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. 'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद के साहित्य संबंधी चिंतन की विशेषताएँ रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

'नाटक' पाठ के आधार पर भारतेन्दु की आलोचना दृष्टि की समीक्षा कीजिए।

4. 'आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएं' पाठ के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की आधुनिकता और मानववाद संबंधी अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'तुलसी-साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

5. 'नयी कहानी : सफलता और सार्थकता' पाठ के आधार पर नामवर सिंह के नयी कहानी सम्बन्धी चिंतन पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'रेणु: समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5287 **K**

Unique Paper Code : 2053100007

Name of the Paper : भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. नाट्योत्पत्ति से संबंधित पश्चिमी सिद्धांतों की विवेचना कीजिए। (18)

अथवा

नाटक के स्वरुप से संबंधित भारतीय अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए।

2. उपरूपक की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके किन्हीं पांच भेदों का वर्णन कीजिए। (18)

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

रेडियो नाटक की विशेषताएँ बताते हुए इसके महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

3. 'अनुकरण काव्य का मूल आधार है' इस कथन के आलोक में अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत का विवेचन कीजिए। (18)

अथवा

'त्रासदी में व्यक्त दुखात्मक भाव भी अंततः सुखात्मक होते हैं' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में विरेचन सिद्धांत के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।

4. ड्रामा की परिभाषा देते हुए उसके स्वरुप पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

कामदी के स्वरुप को स्पष्ट करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं पर विचार कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (9 + 9 = 18)

(क) नाटक के स्वरुप से सम्बंधित पाश्चात्य मान्यताएँ

(ख) लोकनाट्य

(ग) एकांकी

(घ) मैलोड्रामा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

This question paper contains **2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5288**

Unique Paper Code : **2053100008**

Name of the Paper : **हिंदी सिनेमा व्यावसायिक संदर्भ**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi DSE**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. समानांतर सिनेमा का परिचय देते हुए इसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 18

अथवा

हिंदी सिनेमा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए ओटीटी सिनेमा के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित कीजिए।

2. विश्व बाजार में भारतीय सिनेमा के स्थान को निर्धारित कीजिए। 18

अथवा

"सिनेमा के गीत-संगीत का एक बहुत बड़ा बाजार है।" इस कथन की तार्किक समीक्षा कीजिए।

3. वैश्विक बाजार में क्षेत्रीय सिनेमा की उपस्थिति को स्पष्ट कीजिए। 18

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी सिनेमा और सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आए बदलावों को रेखांकित कीजिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. 'पूरब और पश्चिम' फिल्म की समीक्षा कीजिए। 18

अथवा

स्त्री सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत करती हुई 'दंगल' फिल्म पर प्रकाश डालिए।

5. निम्न में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 2×9=18

(क) हिंदी सिनेमा—तकनीक का बाजार

(ख) बायोपिक सिनेमा

(ग) मूक सिनेमा

(घ) 'जंजीर' फिल्म की समीक्षा।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(12)

/

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 5289

Unique Paper Code : 2053100009

Name of the Paper : हिंदी यात्रा साहित्य

Name of the Course : बी.ए. ऑनर्स

Type of paper : DSE

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8=16

(1) असहयोगी स्टोक प्रथम विश्वयुद्ध में सैनिक भरती कराने में उसी तरह तत्परता दिखला रहे थे, जैसे गाँधी जी। किंतु युद्ध-समाप्ति के बाद जो नीति अंग्रेजों ने अपनाई, उससे उन्हें घोर असंतोष हो गया। जिस असंतोष को उन्होंने सिर्फ अपने असहयोग द्वारा ही नहीं प्रकट किया, बल्कि युद्ध के उपलक्ष्य में जो विजय-शिखर स्थापित किया था, उसे तोड़कर उन्होंनें उसी स्थान पर हिंदू पूजा-मंदिर बनाया।

अथवा

यह प्राचीन मार्ग भारत के सभी विदेशी आक्रमणों का मार्ग न भी रहा हो तो भी यहाँ की जातियों का सदा परिचित रहा और नाना देशों के सार्थवाहों ने इसी की धूल की झिलमिल के पार ऋद्धि के स्वप्न देखे। भारत के गांधार उपनिवेश से संपर्क की धमनी तो यह थी ही, ईरान और अरब के लिए भी यही मार्ग था। अभी तक मध्य एशिया के व्यापार के लिए यह प्रमुख निर्यात मार्ग

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

है, और अब भी सप्ताह में एक या दो बार इसी राह से दो कुब्बे बाख्त्री, ऊँटों, बैलों, खच्चरों और गधों के मीलों लंबे काफिले गुज़रते हैं, जिनके साथ टाँडा-टब्बर लिये सैकड़ों काफिलेदार चलते हैं।

(2) ये पहाड़ी छायाएँ एकसी हैं, किंतु हर जगह इनके पल छिन बदलते रंगों को देखा है। जाखू की पहाड़ियों पर स्कूल के कमरे की खिड़की से बाहर इन्हें धीरे-धीरे धूप के संग उतरते देखा है। बहुत बरसों बाद कोटगढ़ के सेब के बगीचों में लेटे हुए पेड़ों की सरसराती टहनियों पर, रानीखेत में चीड़ की सुईनुमा नुकीली पत्तियों की जाली से इन्हें चुपचाप छनते, झरते देखा है।

अथवा

नगर के ताम-झाम और भीड़-भड़क्के से दूर इस शृंग से श्रेष्ठ स्थान अपनी सांस्कृतिक यात्रा की शुरुआत के लिए और हो भी क्या सकता है ? भूस्तर से 695 फुट ऊँची यह चोटी प्रदूषण से कितनी दूर है। यहाँ बहती ठण्डी ब्यार कैसी सुहा रही है। कालचक्र ने फागुन से चैत्र में प्रवेश कर लिया है। फगुआ के रंग तो बस तात्कालिक थे। प्रकृति के कैनवास पर बिखरे ये रंग तो चिरस्थायी हैं, उन्हें समय का अंतराल भला कैसे फीका कर सकता है ?

2. हिंदी यात्रा साहित्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 15

अथवा

हिंदी यात्रा साहित्य का वर्गीकरण करते हुए प्रमुख उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

3. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी यात्रा साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

21वीं सदी के यात्रा साहित्य और भूमंडलीकरण के अंतर्संबंध पर विचार व्यक्त कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. किन्नर देश में यात्रा वृत्तांत के माध्यम से यायावर ने हिमालय के आर्थिक व धार्मिक पक्षों का वर्णन किया है। विस्तार सहित लिखिए। 15

अथवा

'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा वृत्तांत के राजनीतिक एवं सामाजिक पक्ष पर विचार कीजिए।

5. निर्मल वर्मा कृत 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा वृत्तांत का महत्व स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'कामाख्या क्षेत्रें गुवाहाटी नगरे' यात्रा वृत्तांत के सांस्कृतिक पक्ष को उद्घाटित कीजिए।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(1) स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

(2) यात्रा साहित्य का महत्व

(3) तीर्थयात्रीं, यायावर व पर्यटक

(4) विदेशी यात्राओं का महत्व।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(13)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

K

Sr. No. of Question Paper : 10682

Unique Paper Code : 2053100015

Name of the Paper : Kabirdas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. किन्हीं **तीन** पदों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8×3=24)

(क) कबीर सीप समंद की, रटै पियास पियास।

संमदहि तिणका बरि गिणै स्वाति बूँद की आस।।

कबीर सुख कौ जाइ था, आगै आया दुख।

जाहि सुख घरि आपणै हम जाणें अरु दुख।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) लोगे विचारा नींदई, जिन्ह न पाया ग्याँन।

राँम नाँव राता रहै, तिनहूँ, न भाव आँन।।

दोख पराये देखि करि, चल्या हसंत हसंत।

अपने च्यँति न आवई, जिनकी आदि न अंत।।

(ग) मनरे मन ही उलटि समाँना!

गुर प्रसादि अकलि भई तोकौं नहीं तर था बेगाँना।।

नेड़े थे दूरि दूर थैं नियरा, जिनि जैसा करि जाना।

औ लौ ठीका चढ़या बलीडै, जिनि पीया तिनि माना।।

उलटे पवन चक्र षट बेधा, सुन सुरति लै लागि।

अमर न मौ मै नहीं जीवै, ताहि खोजि बैरागी।।

अनभै कथा कवन सी कहिये, है कोई चतुर बिबेकी।

कहै कबीर गुर दिया पलीता, सौ झल बिरलै देखी।।

(घ) जौ मैं ग्याँन बिचार न पाया, तौ मैं यों ही जनम गँवाया।।

यह संसार हाट करि जानू, सबको बणिजण आया।

चेति सके सो चेतौ रे भाई, मूरिख मूल गँवाया।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

थाके नैंन बैंन भी थाके, थाकी सुंदर काया।

जाँमण मरण ए द्वै थाके, एक न थाकी माया।

चेति चेति भेरे मर चंचल, जब लग घट में सासा।

भगति जाव परभाव न जइयौ, हरि क चरन निवासा।।

2. कबीर का जीवन परिचय देते हुए उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

कबीर की साखी में प्रस्तुत विचारों पर प्रकाश डालिए।

3. भक्तिकाल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बताते हुए, कबीर के सांस्कृतिक विचारों से अवगत कराएं। (15)

अथवा

'कबीर अपने समय के सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करते हैं' इस कथन के आलोक में सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।

4. कबीर की भक्ति के स्वरूप का विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

कबीर की लोकप्रियता ने किस प्रकार से समाज को दिशा देने का काम किया है।अपने विचार लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** विषयों पर टिप्पणी लिखिए :- (3×7)

(क) कबीर का धर्म

(ख) कबीर का दर्शन

(ग) कबीर पंथ

(घ) कबीर की सधुक्कड़ी भाषा

(ङ) कबीर की समन्वयात्मक दृष्टि

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5104 **K**

Unique Paper Code : 2052104701

Name of the Paper : Hindi Evam Anya Bhartiya Bhashein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VII – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारत की भाषिक विविधता का विस्तृत परिचय दीजिए।

अथवा

शास्त्रीय भाषा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए किन्हीं तीन शास्त्रीय भाषाओं का परिचय दीजिए। (18)

2. संविधान-सभा में भारतीय भाषाओं पर हुए विचार-विमर्श के मूल बिंदुओं की चर्चा कीजिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति पर विस्तार से विचार कीजिए।

(18)

3. भारतीय भाषाओं और देवनागरी लिपि के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भाषा एवं लिपि के अंतर्संबंधों की विस्तार से विवचेना कीजिए।

(18)

4. वि-उपनिवेशीकरण की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए भारतीय भाषाओं के वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

अथवा

राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन में भारतीय भाषाओं के स्थान और योगदान को रेखांकित कीजिए। (18)

5. **किन्हीं दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएँ

(ख) संविधान में आठवीं अनुसूची की अवधारणा

(ग) प्रमुख भारतीय भाषाएँ और उनकी लिपियाँ

(घ) भारत का वर्तमान बहुभाषिक परिप्रेक्ष्य (9×2=18)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

15

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8785 **K**

Unique Paper Code : 2053100017

Name of the Paper : भारतेंदु हरिश्चन्द्र

Name of the Course : **BA (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (8×2=16)

(क) चूरन अमले सब जो खावै। दूनी रिश्वत तुरत पचावै।।
चूरन नाटक वाले खाते। इसकी नकल पचाकर लाते।।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते।।
चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।।
चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचौ नहिं बात।।
चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।
ले चूरन का देर, बेचा टके सेर।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

मानियों के आगे प्राण और धन तो कोई वस्तु ही नहीं है। वे तो अपने सहज सुभाव ही से सत्य और विचार तथा दृढ़ता में ऐसे बँधे हैं कि सत्पात्र मिलने या बात पड़ने पर उनको स्वर्ण का पर्वत भी तिल- सा दिखाई देता है। और उसमें भी हरिश्चंद्र. जिसका सत्य पर ऐसा स्नेह है जैसा भूमि, कोष, रानी और तलवार पर भी नहीं है। जो सत्यानुरागी ही नहीं है, भला उससे न्याय कब होगा? और जिसमें न्याय नहीं वह राजा ही काहे का है? कैसी भी विपत्ति और भय संकट पड़े और कैसी ही हानि या लाभ हो, पर जो न्याय न छोड़े, वही धीर और वही राजा और उस न्याय का मूल सत्य है।

(ख) मुझे तो उनकी सब गीतों में "बोलो प्यारी सखियाँ सीताराम राम राम" यही अच्छा मालूम हुआ। राह में मेला जहाँ पड़ा मिलता था वहा बारात का आनंद दिखलाई पड़ता था। खैर मै डाँक पर बैठा बैठा सोचता था कि काशी में रहते तो बहुत दिन हुए परंतु शिव आज ही हुए क्योंकि वृषभवाहन हुए। फिर अयोध्या याद आई कि हा! यह वही अयोध्या है जो भारतवर्ष में सबसे पहले राजधानी बनाई गई। इसी में महात्मा इक्ष्वाकु, मांधाता, हरिश्चंद्र, दिलीप, अज, रघु, श्री रामचंद्र हुए हैं और इसी के राजवंश के चरित्र में बड़े बड़े कवियों ने अपनी बुद्धिशक्ति की परिचालना की है। संसार में इसी अयोध्या का प्रताप किसी दिन व्याप्त था और सारे संसार के राजा लोग इसी अयोध्या की कृपाण से किसी दिन दबते थे वही अयाध्या अब देखी नहीं जाती।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

लिबरल लोगों की सभा भी बड़ी धूमधाम से जमती थी। किंतु इस सभा में दो दल हो गए थे, एक जो केशव की विशेष स्तुति करते, दूसरे वे जो दयानन्दु को विशेष आदर देते थे। कोई कहता, अहा धन्य दयानन्द जिसने आर्यावर्त के निंदित आलसी मूर्खों की मोह-निद्रा भंग कर दी। हजारों मूर्खों को ब्राह्मणों के (जो कंसरवेटिवों के पादरी और व्यर्थ प्रजा का द्रव्य खाने वाले हैं) फंदे से छुड़ाया। बहुतों को उद्योगी और उत्साही कर दिया। वेद में रेल, तार, कमेटी, कचहरी दिखाकर आर्यों की कटती हुई नाक बचा ली। कोई कहता, धन्य केशव! तुम साक्षात दूसरे केशव हो। तुमने बंग देश की मनुष्य नदी के उस वेग को, जो क्रिश्चन समुद्र में मिल जाने को उच्छलित हो रहा था, रोक दिया। ज्ञानकर्म का निरादर करके परमेश्वर का निर्मल भक्ति-मार्ग तुमने प्रचलित किया।

2. हिंदी नवजागरण को परिभाषित करते हुए इस युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्यिक योगदान पर विस्तार से प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भारतेंदु युग को 'राष्ट्रीय चेतना का प्रारम्भिक युग' कहा जाता है - इस कथन के आलोक में भारतेन्दुयुगीन परिस्थितियों की विवेचना कीजिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. भारतेंदु की "गंगा वर्णन" कविता में अभिव्यक्त धार्मिक भावना एवं राष्ट्रीय चेतना के समन्वय पर विस्तार से चर्चा कीजिए। (15)

अथवा

हास्य-व्यंग्य की दृष्टि से भारतेंदु की मुकरियाँ सामाजिक विसंगतियों को उजागर करती हैं, स्पष्ट करें।

4. भारतेंदु कृत 'अंधेर नगरी' नाटक की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

5. 'दिल्ली दरबार दर्पण' निबन्ध की मुख्य विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

'नाटक' निबन्ध के आधार पर भारतेंदु की नाट्य-दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7×2=14)

(क) भारतेंदु हरिश्चन्द्र का रचना संसार

(ख) भारतेंदु के दोहों में निहित संदेश

(ग) सत्य हरिश्चन्द्र नाटक का सार

(घ) 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' निबन्ध का उद्देश्य

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This paper contains 02 printed pages.]
Sr. No of Question Paper: 5461
Unique Paper Code : 2053102002
Name of Paper : Rashtriya Sanskritik Kavyadhara
Name Of Course : B.A. : Hindi DSE
Semester : III

Duration: 03 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश :
इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं.

1.निम्नलिखित अवतरणों की सप्रंग व्याख्या कीजिए : (10 ×3) = 30

(क) सूखत धान परा पानी सब धरा हरष के फूल उठी।
दीन किसान प्रसन्न अन्न अब पावैंगे दो चार मुठी॥
धन! धन! दीनदयाल तुम्हारी दया का पारावार नहीं।
कर दिया लहर बहर छिन भर में रहा न दुःख का नाम कहीं॥
ठहर गयी बाज़ार, दहल गए निठुर सभी गल्लेवाले।
रह गये लोग लोभ सब बह गए, भए अकाल के मुँह काले॥

अथवा

शिल्प कला सम्यक् प्रकार उन्नतकर शीघ्र प्रचारो।
निज व्यापर अपार प्रसार करो करो जग यश विस्तारो॥
आवश्यक समाज संशोधन करो न देर लगाओ।
हुए नवीन सभ्य औरों से अपने को न हँसाओ॥
अपनी जाति वस्तु अपने आचार देश भाषा से।
रक्खो प्रीति रीति निज धर्म्म वेष पर अति ममता से॥

(ख) रण-चण्डी को पिला दिया
शोणित-मदिरा का प्याला।
बड़वानल सी धधका दी थी
क्रोधानल की ज्वाला॥
उसके एक इशारे पर
वीरों ने ले ली तलवारें
पर्वत-रथ रंग दिए रक्त से,
ले शत-शत खरधारें॥
गूँज रही जावर-माला में
उसकी अमर कहानी।
आज तक हल्दीघाटी के पथ
पर है समर-निशानी॥

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

भूषन अथवा कवि चन्द नहीं,
बिजली भर दे वह छन्द नहीं,
है कलम बँधी, स्वछन्द नहीं
फिर हमें बतावे कौन? हन्त!
वीरों का कैसा हो वसंत?

(ग) कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाए!
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए,
बरसे आग, जलद जल जाएँ, भस्मसात् भूधर हो जाएँ:
पाप पुण्य सदसद् भावों की धूल उड़ उठे दाएँ बाएँ।

अथवा

वह सुनो ,सत्य चिल्लाता है ले मेरा नाम अँधेरे में,
करुणा पुकारती है मुझको आबद्ध घृणा के घेरे में।
श्रद्धा, मैत्री, विश्वास, प्रेम, बन्दी हैं मेरे सभी लोग,
धिक्कार मुझे जो सहूँ किसी के भय से मैं इनका वियोग।

(2) राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

(3) 'आनंद अरुणोदय' कविता के आधार पर देशवासियों के लिए सुझाए गए आचरण सम्बन्धी निर्देशों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'यह है भारत देश हमारा' कविता के आधार पर भारत के वैभव विचार कीजिए।

(4) 'वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है'- भारत-भारती के अतीत खण्ड के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त के इस कथन पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'आजादी के फूलों पर जय-जय' कविता में आजादी के फूल कौन हैं? कवि की उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं?

(5) 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता के आधार पर भारत की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'बापू' कविता के आधार पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

17

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 12898 **K**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) बिनु देबे उपजै नहीं आसा, जो दीसै सो होई बिनासा
बरन सहित जो जाये नामु, सो जोगी केवल निहकानु
परचौ रामु रवै जो कोई, पारसु परसै दुबिधा न होई
सो मुनि मन की दुबिधा पाई, बिनु दुआरे त्रैलोक समाई
मन का सुभाउ सभु कोई करे, करता होई सु अनभे रहे

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर,
दावा नगजुह पर सिंहसिरताज को
दावा पुरहुत को पहारन के कुल पर
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषण अखंड नवखंड महिमंडल में
तम पर दावा रबिकिरन समाज को
पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को

(ख) कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत लजियात
भरे भौंन में करत हैं नैनन हीं सौ बात
जोग जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन
चाहत पिय अद्वैत ता काननु सेवत नैन

अथवा

यह क्या, कि उस आंगन सुने थे, वे सजीले मृदुल रुम झुन
यह क्या, कि इस वीथी तुम्हारे तोतले बोल फूटे
यह क्या, कि इस वैभव बने थे, चित्र हँसते और रूठे
आज यादों का खजाना, याद भर रह जायेगा क्या?
यह मधुर प्रत्यक्ष, सपनों के बहाने जायेगा क्या?

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है-बढ़े चलो-बढ़े चलो

अथवा

शत-शत निर्झर निर्शरिणी कल
मुखरित देवदास कानन में
शोणित धवल भोजपत्रों से
छाई हुई कुटी के भीतर,
रंग बिरंगे और सुगंधित
फूलों से कुन्तल को साजे
इंद्रनिल की माला डाले
शंख सरीखे सुघड़ गलों में
कानों में कुवलय लटकाए
शतदल लाल कमल वेणी में
रचित रचित मणि खचित कलामय

2. हिंदी के विकास क्रम को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका - इस विषय पर लेख लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

3. वीरगाथकाल की विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

भारतेंदु युग की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

4. रैदास की भक्ति भावना का परिचय दीजिये। (12)

अथवा

भूषण वीर रस के कवि हैं - स्पष्ट कीजिए।

5. बिहारी का साहित्यिक परिचय लिखिए (12)

अथवा

'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता में निहित राष्ट्रीय चेतना का विवेचन कीजिए।

6. किन्ही **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (6×3=18)

(क) माखनलाल चतुर्वेदी

(ख) छायावाद

(ग) राम काव्य

(घ) 'बेटी की विदाई' की मूल संवेदना

(ङ) कृष्ण काव्यधारा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(18)

T-054 = 03 - 32
06 = 26

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 12622 **K**

Unique Paper Code : 2055002011

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (8+8+8=30)

(क) अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझा वह पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और धन ऐश्वर्य को कड़ी

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

12622

चोट लगी। किंत अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले, लाला जी एक हजार के नोट बाबू साहब की भेंट करो। इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं। वंशीधर ने गरम होकर कहा, एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते। धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछलकर आक्रमण करने शुरू किये। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अथवा

मलबे में अब मिट्टी-ही-मिट्टी थी जिसमें से जहाँ-तहाँ टूटी और जली हुई ईंटें बाहर झाँक रही थीं। लोहे और लकड़ी का सामान उसमें से कब का निकाला जा चुका था। केवल एक जले हुए

दरवाजे का चौखट न जाने कैसे बचा रह गया था। पीछे की तरफ दो जली हुई अलमारियाँ थीं जिनकी कालिख पर अब सफेदी की हल्की-हल्की तह उभर आई थीं। उस मलबे को पास से देखकर गनी ने कहा, ष्यह बाकी रह गया है, यह? और उसके घुटने जैसे जवाब दे गए और वह वहीं जले हुए चौखट को पकड़कर बैठ गया। क्षण-भर बाद उसका सिर भी चौखट से जा सटा और उसके मुँह से बिलखने की-सी आवाज निकली, "हाय ओए चिरागदीना!" जले हुए किवाड़ का वह चौखट मलबे में से सिर निकाले साढ़े सात साल खड़ा तो रहा था, पर उसकी लकड़ी बुरी तरह भुरभुरा गई थी। गनी के सिर के छुने से उसके कई रेशे झड़कर आसपास बिखर गए।

(ख) अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है। उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है। बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है। पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है। जीवन

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

के आरंभ में इन्हीं दोनों के विरुद्ध हँसना और रोना देखे जाते हैं पर ये अनुभूतियाँ बिलकुल सामान्य रूप में रहती हैं, विशेष-विशेष विषयों की ओर विशेष-विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होतीं।

अथवा

राम तो वन से लौट आए, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आए, पर लोकमानस में राम की बनयात्रा अभी नहीं रूकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भीगने की आशंका अभी भी साल रही है। कितनी अयोध्याएँ बसीं, उजड़ीं, पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों कशों, कंकड़ों पत्थरों की बैसी ही ताजा चुभन लिये हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है, वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे और उनके राजपाट को सम्भालने वाले भरत अयोध्या के समीप रहते हुए भी उनसे भी अधिक निर्वासित रहेंगे, निर्वासित ही नहीं, बल्कि एक कालकोठरी में बंद जिलावतनी की तरह दिन बिताएँगे।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) भाग्य! भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है। मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं, तो ये मौन हो जाते हैं, वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो। मैं कौन होती हूँ बीच में बोलनेवाली?

अथवा

जब स्त्री का व्यक्तित्व उसके पति से स्वतंत्र नहीं माना जाता था तब वे कहती हैं, 'मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे यह स्त्री शरीर के अंदर निवास करती हो चाहे पुरुष-शरीर के अंदर। इसी से पुरुष और स्त्री का अपना-अपना व्यक्तित्व अलग रहता है।' जब समाज और परिवार की सत्ता के विरुद्ध कुछ कहना अधर्म माना जाता था तब वे कहती हैं, 'समाज और

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

परिवार व्यक्ति को बँधन में बाँधकर रखते हैं। ये बँधन देशकालानुसार बदलते रहते हैं और उन्हें बदलते रहना चाहिए बरना वे व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने के बदले बाधा पहुँचाने ने लगते हैं। बँधन कितने ही अच्छे उद्देश्य से क्यों न नियत किए गए हों, हैं बँधन ही, और जहाँ बँधन है वहाँ असंतोष है तथा क्रांति है।'

2. हिंदी गद्य के विकास की संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

अथवा

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य में निबंध विधा का महत्व स्पष्ट कीजिए। 5.

3. 'नमक का दरोगा' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

'मलबे का मालिक' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए

4. 'भाव और मनोविकार' निबंध का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

"मेरे राम का मुकुट भीग रहा है" निबंध का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

'सुभद्रा' संस्मरण में नारी-जीवन की करुणा और संवेदना का मार्मिक चित्रण हुआ हैश, इस कथन पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'दीपदान' नाटक में विद्यमान सामाजिक संदेश को रेखांकित कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए –

(क) रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर

(ख) एकांकी और नाटक में अंतर

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **14156**

Unique Paper Code : **2052202301**

Name of the Paper : **हिंदी कथा साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Type of Paper : **DSE-5**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10+10=30

(क) शैलमाला के अंचल में समतल उर्वरा भूमि से सोंधी बास उठ रही थी। नगर-तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामधारी शुण्ड उन्नत दिखाई पड़ा। वह हर्ष और उत्साह का समुद्र हिलोर भरता हुआ आगे बढ़ने लगा। प्रभात की हेम किरणों से अनुरंजित नन्हीं नन्हीं बूंदों का एक झोंका स्वर्ण मल्लिका के समान बरस पड़ा। मंगल सूचना से जनता ने हर्ष ध्वनि की। रथों, हाथियों और अश्वारोहियों की पंक्ति थी। दर्शकों की भीड़ भी कम न थी।

अथवा

"हाँ बेटा, हमारे देश की माताएँ आवश्यकता पड़ने पर मुसकराती हुई भस्म हो जाने में अपना सौभाग्य समझती हैं। खैर, कहानी सुनो। जब प्रायः सभी औरतें अग्निकुंड में कूद पड़ीं और

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

14156

अंगारों के विमान पर बैठकर स्वर्ग की ओर चल पड़ीं, तब राजपूतों की बची-खुची विकट वाहिनी किले के बाहर हुई। उस सेना का प्रत्येक सैनिक केसरिया बाने से सजा था।" "दुर्ग के बाहर सेना दो टुकड़ी में बाँट दी गई। एक आग की संरक्षता में बच्चे एक सुरक्षित स्थान की ओर भेजे गए और दूसरा भाग असावधान विपक्ष सेना पर 'हर-हर महादेव!' पुकारकर टूट पड़ा।

(ख) हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की अनुमानित सीमा के पास एक गाँव में कई सौ मुसलमानों ने सिक्खों के गाँव में शरण पाई। अंत में जब आस-पास के गाँव के और अमृतसर शहर के लोगों के दबाव ने उस गाँव में उनके लिए फिर आसन्न संकट की स्थिति पैदा कर दी, तब गाँव के लोगों ने अपने मेहमानों को अमृतसर स्टेशन पहुँचाने का निश्चय किया जहाँ से वे सुरक्षित मुसलमान इलाके में जा सकें, और दो-ढाई सौ आदमी किरपानें निकालकर उन्हें घेर में लेकर स्टेशन पहुँचा आये—किसी को कोई क्षति नहीं पहुँची—घटना सुनकर रफ़ीकुद्दीन ने कहा, "आखिर तो लाचारी होती है, अकेले इनसान को झुकना ही पड़ता है।"

अथवा

खाली क्षणों में उनसे घर में टिका न जाता। कवि प्रकृति के न होने पर भी उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद आती रहतीं। दोपहर में गर्मी होने पर भी, वह दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकती, उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा-सा कुछ और थाली में परोस देती और बड़े प्यार से आग्रह करती। जब वह थके-हारे बाहर से आते, तो उनकी आहट पा वह रसोई के द्वार पर निकल आती और उनकी सलज्ज आँखें मुस्करा उठतीं। गजाधर बाबू को तब हर छोटी बात भी याद आती और वह उदास हो उठते "अब कितने वर्षों बाद वह अवसर आया था, जब वह फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे।"

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) जालपा कई मिनट तक सड़क पर निस्पंद-सी खड़ी रही। उन्हें कैसे रोक लूँ। इस वक्त वह कितने दुखी हैं, कितने निराश हैं ! मेरे सिर पर न जाने क्या शैतान सवार था कि उन्हें बुला न लिया। भविष्य का हाल कौन जानता है। न जाने कब भेंट होगी। विवाहित जीवन के इन दो-ढाई सालों में कभी उसका हृदय अनुराग से इतना प्रकंपित न हुआ था। विलासिनी रूप में वह केवल प्रेम आवरण के दर्शन कर सकती थी। आज त्यागिनी बनकर उसने उसका असली रूप देखा, कितना मनोहर, कितना विशुद्ध, कितना विशाल, कितना तेजोमय। विलासिनी ने प्रेमोद्यान की दीवारों को देखा था, वह उसी में खुश थी।

अथवा

क्वार का महीना लग चुका था। मेघ के जल-शून्य टुकड़े कभी-कभी आकाश में दौड़ते नजर आ जाते थे। जालपा छत पर लेटी हुई उन मेघ-खंडों की किलोलें देखा करती। चिंता व्यथित प्राणियों के लिए इससे अधिक मनोरंजन की और वस्तु ही कौन है ? बादल के टुकड़े भाँति-भाँति के रंग बदलते, भाँति-भाँति के रूप भरते, कभी आपस में प्रेम से मिल जाते, कभी इंठकर अलग-अलग हो जाते, कभी दौड़ने लगते, कभी ठिठक जाते। जालपा सोचती, रमानाथ भी कहीं बैठे यही मेघ-क्रीड़ा देखते होंगे।

2. कहानी की संरचना में शिल्प के महत्व पर विचार कीजिए। 18

अथवा

उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसकी विकास यात्रा पर चर्चा कीजिए।

3. 'पुरस्कार' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। 14

अथवा

'ऐसी होली खेलो लाल' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. 'शरणदाता' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 14

अथवा

'वापसी' कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

5. 'गबन' उपन्यास की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

'गबन' उपन्यास के आधार पर रतन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY